केले का भोज-5

“मैं कुछ नहीं सुन पा रही थी, कुछ नहीं समझ पा रही थी। कानों में यंत्रवत आवाज आ रही थी- निशा… बी ब्रेव…! यह सिर्फ हम तीनों के बीच रहेगा…..!’ मेरी आँखों के आगे अंधेरा छाया हुआ है। मुझे पीछे ठेलकर तकिए पर लिटा रही है। मेरी नाइटी ऊपर खिंच रही है… मेरे पैर, घुटने, […] …”

Story By: (happy123soul)
Posted: Friday, February 5th, 2010
Categories: जवान लड़की
Online version: केले का भोज-5

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

केले का भोज-5

मैं कुछ नहीं सुन पा रही थी, कुछ नहीं समझ पा रही थी। कानों में यंत्रवत आवाज आ रही थी- निशा… बी ब्रेव… ! यह सिर्फ हम तीनों के बीच रहेगा…..!'

मेरी आँखों के आगे अंधेरा छाया हुआ है। मुझे पीछे ठेलकर तकिए पर लिटा रही है। मेरी नाइटी ऊपर खिंच रही है… मेरे पैर, घुटने, जांघें… पेड़ू… कमर…प्रकट हो रहे हैं। मेरी आत्मा पर से भी खाल खींचकर कोई मुझे नंगा कर रहा है। पैरों को घुटनों से मोड़ा जा रहा है… दोनों घुटनों को फैलाया जा रहा है। मेरा बेबस, असहाय, असफल विरोध… मर्म के अन्दर तक छेद करती पराई नजरें… स्त्री के बेहद अंतरंगता के चिथड़े चिथड़े करती…

जांघों पर, पेड़ू पर घूमते हाथ… बीच के बालों को सरकाते हुए… होंठों को अलग करने का खिंचाव…
'साफ से देख नहीं पा रहा, जरा उठाओ।'

मेरे सिर के नीचे से एक तकिया खींचा है। मेरे नितंबों के नीचे हाथ डालकर उठाकर तकिया लगाया जा रहा है… मेरे पैरों को उठाकर घुटनों को छाती तक लाकर फैला दिया गया है… सब कुछ उनके सामने खुल गया है। गुदा पर ठंडी हवा का स्पर्श महसूस हो रहा है… ॐ भूर्भुव :… धीमहि… पता नहीं क्यों गायत्री मंत्र का स्मरण हो रहा है। माता रक्षा करो…

केले की ऊपरी सतह दिख रही है। योनि के छेद को फैलाए हुए। काले बालों के के फ्रेम में लाल गुलाबी फाँक… बीच में गोल सफेदी… उसमें नाखून के गड्ढे…
कुछ देर की जांच-परख के बाद मेरा पैर बिस्तर पर रख दिया जाता है। मैं नाइटी खींचकर ढकना चाहती हूँ, पर…

'एक कोशिश कर सकती है।'
'क्या ?'

'मास्टरबेट (हस्तेमैथुन) करके देखे। हो सकता है ऑर्गेज्म(स्खलन) के झटके और रिलीज(रस छूटने) की चिकनाई से बाहर निकल जाए।'
नेहा सोचती है।
'निशा !'

मैं कुछ नहीं बोलती। उन लोगों के सामने हस्तमैथुन करना ! स्खलित भी होना !!! ओ माँ !
'निशा', इस बार नेहा का स्वर कठोर है,'बोलो...'
क्या बोलूँ मैं। मेरी जुबान नहीं खुलती।
'खुद करोगी या मुझे करना पड़ेगा ?'

वह मेरा हाथ खींचकर वहाँ पर लगा देती है,'करो।'
मेरा हाथ पड़ा रहता है।
'डू इट यार !'
मैं कोई हरकत नहीं करती, मर जाना बेहतर है।
'लेट अस डू इट फॉर हर (चलो हम इसका करते हैं)।'

मैं हल्के से बाँह उठाकर पलकों को झिरी से देखती हूँ। सुरेश सकुचाता हुआ खड़ा है। बस मेरे उस स्थल को देख रहा है।
नेहा की हँसी,'सुंदर है ना ?'
शर्म की एक लहर आग-सी जलाती मेरे ऊपर से नीचे निकल जाती है, बेशर्म लड़की... !
'क्या सोच रहे हो ?'

सुरेश दुविधा में है, इजाजत के बगैर किसी लड़की का जननांग छूना ! भलामानुस है।

तनाव के क्षण में नेहा का हँसी-मजाक का कीड़ा जाग जाता है,'जिस चीज की झलक भर पाने के लिए ऋषि-मुनि तरसते हैं, वह तुम्हें यूँ ही मिल रही है, क्या किस्मत है तुम्हारी !'
मैं पलकें भींच लेती हूँ। साँस रोके इंतजार कर रही हूँ ! टांगें खोले।
'कम ऑन, लेट्स डू इट...'

बिस्तर पर मेरे दोनों तरफ वजन पड़ता है, एक कोमल और एक कठोर हाथ मेरे उभार पर आ बैठते हैं, बालों पर उंगलियाँ फेरने से गुदगुदी लग रही है, कोमल उंगलियाँ मेरे होंठों को खोलती हैं अन्दर का जायजा लेती हैं, भगनासा का कोमल पिंड तनाव में आ जाता है, छू जाने से ही बगावत करता है, कभी कोमल, कभी कठोर उंगलियाँ उसे पीड़ित करती हैं, उसके सिर को कुचलती, मसलती हैं, गुस्से में वह चिनगारियाँ सी छोड़ता है। मेरी जांघें थरथराती हैं, हिलना-डुलना चाहती हैं, पर दोनों तरफ से एक एक हाथ उन्हें पकड़े है, न तो परिस्थिति, न ही शरीर मेरे वश में है।

'यस... ऐसे ही...' नेहा मेरा हाथ थपथपाती है तब मुझे पता चलता है कि वह मेरे स्तनों पर घूम रहा था। शर्म से भरकर हाथ खींच लेती हूँ।
नेहा हँसती है,'अब यह भी हमीं करें ? ओके...'

दो असमान हथेलियाँ मेरे स्तनों पर घूमने लगती हैं। नाइटी के ऊपर से। मेरी छातियाँ परेशान दाएं-बाएँ, ऊपर-नीचे लचककर हमले से बचना चाह रही हैं पर उनकी कुछ नहीं चलती। जल्दी भी उन पर से बचाव का, कुछ नहीं-सा, झीना परदा भी खींच लिया जाता है, घोंसला उजाड़कर निकाल लिए गए दो सहमे कबूतर... डरे हुए ! उनका गला दबाया जाता है, उन्हें दबा दबाकर उनके मांस को मुलायम बनाया जा रहा है- मजे लेकर खाए जाने के लिए शायद।

उनकी चोंचें एक साथ इतनी जोर खींची जाती है कि दर्द करती हैं, कभी दोनों को एक साथ इतनी जोर से मसला जाता है कि कराह निकल जाती है। मैं अपनी ही तेज तेज साँसों की

आवाज सुन रही हूँ। नीचे टांगों के केन्द्र में लगातार घर्षण, लगातार प्रहार, कोमल उंगलियों की नाखून की चुभन... कठोर उंगलियों की ताकतवर रगड़ ! कोमल कली कुचलकर लुंज-पुंज हो गई है।
सारे मोर्चों पर एक साथ हमला... सब कुछ एक साथ... ! ओह... ओह... साँस तो लेने दो...
'हाँ... लगता है अब गर्म हो गई है।' एक उंगली मेरी गुदा की टोह ले रही है।

मैं अकबका कर उन्हें अपने पर से हटाना चाहती हूँ, दोनों मेरे हाथ पकड़ लेते हैं, उसके साथ ही मेरे दोनों चूचुकों पर दो होंठ कस जाते हैं, एक साथ उन्हें चूसते हैं !

मेरे कबूतर बेचारे ! जैसे बिल्ली मुँह में उनका सिर दबाए कुचल रही हो। दोनों चोंचें उठाकर उनके मुख में घुसे जा रहे हैं।
हरकतें तेज हो जाती हैं।
'यह बहुत अकड़ती थी। आज भगवान ने खुद ही इसे मुझे गिफ्ट कर दिया।' नेहा की आवाज... मीठी... जहर बुझी...
'तुम इसके साथ ?'
'मैं कब से इसका सपना देख रही थी।'
'क्या कहती हो ?'

'बहुत सुन्दर है ना यह !' कहती हुई वह मेरे स्तनों को मसलती है, उन्हें चूसती है। मैं अपने हाँफते साँसों की आवाज खुद सुन रही हूँ। कोई बड़ी लहर मरोड़ती सी आ रही है...

'निशा, जोर लगाओ, अन्दर से ठेलो।' सुरेश की आवाज में पहली बार मेरा नाम... नेहा की आवाज के साथ मिली। गुदा के मुँह पर उंगली अन्दर घुसने के लिए जोर लगाती है।
यह उंगली किसकी है ?

मैं कसमसा रही हूँ, दोनों ने मेरे हाथ-पैर जकड़ रखे हैं,'जोर से... ठेलो।'
मैं जोर लगाती हूँ। कोई चीज मेरे अन्दर से रह रहकर गोली की तरह छूट रही है... रस से चिकनी उंगली सट से गुदा के अन्दर दाखिल हो जाती है। मथानी की तरह दाएँ-बाएँ घूमती है।
आआआह... आआआह... आआह...

'यस यस, डू इट...!' नेहा की प्रेरित करती आवाज, सुरेश भी कह रहा है। दोनों की हरकतें तेज हो जाती हैं, गुदा के अन्दर उंगली की भी। भगनासा पर आनन्द उठाती मसलन दर्द की हद तक बढ़ जाती है।
ओ ओ ओ ओ ओ ह... खुद को शर्म में भिगोती एक बड़ी लहर, रोशनी के अनार की फुलझड़ी... आह..
एक चौंध भरे अंधेरे में चेतना गुम हो जाती है।

'यह तो नहीं हुआ ? वैसे ही अन्दर है !'... मेरी चेतना लौट रही है- अब क्या करोगी ?'
कुछ देर की चुप्पी ! निराशा और भयावहता से मैं रो रही हूँ।

'रोओ मत !' सुरेश मुझे सहला रहा है, इतनी क्रिया के बाद वह भी थोड़ा-थोड़ा मुझ पर अधिकार समझने लगा है, वह मेरे आँसू पोंछता है,'इतनी जल्दी निराश मत होओ।'
उसकी सहानुभूति बुरी नहीं लगती।

कहानी जारी रहेगी।
happy123soul@yahoo.com
2386

Other stories you may be interested in

बॉयज होस्टल में गर्लफ्रैंड का प्यार

दोस्तो, मैं बैडमैन आप लोगों के सामने फिर से एक बार अपनी कहानी लेकर पेश हुआ हूँ। मेरी पिछली कहानी थी गर्लफ्रेंड की सहेली की प्यासी चूत और गांड मेरी कहानियां कोई सीरियल से नहीं है, कोई आगे पीछे चल […]
Full Story >>>

पहली बार लंड चूसने का मजा

मेरे प्यारे दोस्तो, आप सभी को मेरा प्यार भरा नमस्कार. सबसे पहले मैं अन्तर्वासना सेक्स स्टोरीज साईट को धन्यवाद करना चाहता हूँ जिसने हमें अपनी एडल्ट कहानी शेयर करने के लिए अवसर और स्थान दिया. मेरा नाम मोहित है. मेरी […]
Full Story >>>

दोस्त की गांड मारी : मेरी गे सेक्स स्टोरी-1

हैलो दोस्तो.. मैं एक बार फिर से हाज़िर हूँ अपनी गे सेक्स स्टोरीज के साथ ! आशा करता हूँ आपको मजा आएगा। मेरी पिछली कहानी मेरी गांड चुदाई की शुरूआत : गे सेक्स स्टोरी पहली बार मेरी गांड की चुदाई की […]
Full Story >>>

मेरी कमसिन चूत और लेस्बीयन लड़कियाँ हॉस्टल में-2

मेरी कमसिन चूत और लेस्बीयन लड़कियाँ हॉस्टल में-1 अब तक आपने मेरी इस सेक्स स्टोरी में पढ़ा था कि मैं एक गर्ल्स होस्टल में पहली बार गई थी और ऊषा दीदी ने मेरी छोटी छोटी चुची चूस कर मुझे लेस्बीयन […]
Full Story >>>

मेरी गांड चुदाई की शुरूआत : गे सेक्स स्टोरी

दोस्तो, मेरी गांड चुदाई की जे सेक्स स्टोरी में आप सभी का स्वागत है। मेरा नाम राज है.. मेरी उम्र 22 साल की है। मेरे लंड का साइज 7 इंच का है.. जो किसी भी महिला के हर छेद के […]
Full Story >>>